Dr. Kaushal Kumar
B. A. III
Sem-VI

जबकि लोगों का राज अधिक माँग थी था। बिना माँग के वस्तु का उत्पादन, अर्थिमयन की स्थिति थी, कामि को बढ़ाता है। परन्तु धीरे-धीरे सामान की माँग समाप्त हो गई। दूसरे मन्दी राष्ट्रीय आय के उत्पादन की माँग कम कर दी इससे अधिक उत्पादन को बनाना मुश्किल हो गया और उत्पादन और उपभोग में असंतुलन ने मूल्यों में गिरने की प्रवृत्ति को बढ़ाया। इसमें धन का असमान वितरण, मशीनीकरण, प्रतियोगिता पर नियंत्रण तथा सरकारी नीति ने योगदान दिया।

(ix) कृषि आय में कमी:- उस समय तक अमेरिका में कृषि की प्रधानता थी और अधिकांश जन जीवन का आधार भी पर कृषकों की ऋणग्रस्तता, विक्रय-संगठनों का अभाव, विदेशों में निर्यात में कठिनाई से अनिश्चित उत्पादन का स्टॉक उत्तरोत्तर बढ़ता गया और कृषि जन्य पदार्थों की कीमतों में 60% की भारी कमी से कृषकों की क्रय-शक्ति बहुत कम हो गई जिससे औद्योगिक माल की कीमतों में गिरावट आई।

(x) अव्यावहारिक बैंकिंग नीति:- बैंकों की उदार ऋण नीति से ऋणों में भारी वृद्धि हुई। पहले में धन की उधार की सीमा उच्च बढ़ गई थी ऊँची दरों पर विनियोग होने लगे और ऋण की मात्रा बढ़ती गई पर ज्योंहि मंदी का आविर्भाव हुआ त्योंहि प्रतिभूतियों के मूल्य गिरने लगे। बैंकों के फेल होने का दौर चला और जनता में असंतोष से बैंकों अङ्गवदाली स्थिति ने औद्योगिक स्थिति को भी झकझोर दिया। इसको पेचिदा बनाने में वाल स्ट्रीट का योग भी कम न था

(xi) आर्थिक राष्ट्रवाद व विदेशी व्यापार में कमी:- प्रथम विश्वयुद्ध के बाद विश्व के सभी राष्ट्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के बजाय आर्थिक राष्ट्रवाद की प्रवृत्ति प्रबल हो रही थी। प्रतिबन्धात्मक संरक्षण की नीति से विदेशी व्यापार में कमी हुई तथा अति-उत्पादन की समस्या जटिल बनी।

महान आर्थिक मन्दी के निवारण के उपचार

(Measures To fight the great Depression):- आर्थिक मंदी के दुष्प्रभावों का विवेचन यह स्पष्ट करता है कि इस महान ऐतिहासिक मन्दी ने अमेरिकी अर्थव्यवस्था के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया था। इन आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक दुष्प्रभावों के निवारण के लिए अनेक प्रकार के

Cont-

अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन उपचार बताये गये। आर्थिक मंदी की शुरुआत 24 अक्टूबर 1929 को राष्ट्रपति हूवर (President Hoover) के समय में हुई थी। राष्ट्रपति हूवर रिपब्लिकन दल के अनुयायी होने से स्वतंत्र व्यापार और निर्बाध नीति के समर्थक और वे आर्थिक क्षेत्र में सरकार के कम से कम हस्तक्षेप के हामी थे। उन्होंने आर्थिक मंदी को अल्पकालीन समझा तथा उनकी यह धारणा थी वह अपने आप हल हो जायेगी। यही कारण था कि प्रारम्भ में कोई प्रभावी कदम नहीं उठाये गये। पर स्थिति बिगड़ती गई और समस्या का उपचार अति आवश्यक हो गया तब हूवर ने कतिपय उपायों की शुरुआत की।

(1) राष्ट्रपति हूवर (Hoover) के शासन काल में मंदी के उपचार:- जब 1929 में स्टॉक मार्केट संकट ने अपना भीषण रूप धारण कर लिया तो राष्ट्रपति हूवर ने सामान्य व्यवसाय एवं मजदूरी की प्रचलित दरों में स्थायित्व रखने के लिए उद्योग पतियों से सहमति प्राप्त की। अर्थव्यवस्था में स्थायित्व बनाये रखने के प्रयत्न असफल सिद्ध हुए वस्तुओं के मूल्यों में तेजी से गिरावट तथा बेकारी का दबाव बढ़ता जा रहा था। ऐसी परिस्थिति में सार्वजनिक व्यय में वृद्धि कर क्रय शक्ति प्रदान करने तथा रोजगार उपलब्ध कराने के अलावा कोई विकल्प नहीं रहा। इस कारण कांग्रेस बोर्ड एवं सार्वजनिक कार्यों पर व्यय को बढ़ाने में अधिक उत्सुक थी और साथ ही साथ निजी व्यक्तियों, कम्पनीयों तथा संस्थाओं का भी अधिक निर्माण कार्यों को प्रोत्साहित करने का उद्देश्य रखा गया।

1929 में कृषि विपणन अधिनियम (Agricultural Marketing act) के अन्तर्गत स्थापित संघीय कृषि मण्डल (Federal farm Board) ने अनाज और कपास की कीमतों को बढ़ाने के लिए अनाज एवं कपास स्थिरीकरण निगम (Grain and Cotton Stabilization corporation) स्थापित किया गया और इस निगम ने अपने कार्य की पूर्ति के लिए लगभग 50 करोड डॉलर व्यय किया।

Cont.

Dr. Kaushal Kumar
B.A. III
Eco-H

Q. अमेरिका में महान आर्थिक मन्दी के कारण एवं उसके निवारण के उपायों का वर्णन करें।

Ans:- आर्थिक व्यवस्था में व्यापार चक्र के फलस्वरूप जो आर्थिक मन्दी का आना है उसे आर्थिक क्रियाओं का संकुचन होना है, उत्पादन में कमी, बेरोजगारी में वृद्धि, गिरते हुए मूल्य तथा आय स्तर आर्थिक क्षेत्र में अंधकार कर देना है। आर्थिक व्यवस्था में (poverty in plenty) की अकल्पनीय स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

अमेरिका में भी 1929 में आर्थिक मन्दी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के इतिहास में एक ऐसा झटका था कि इसके प्रभाव से देश की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई और लोगों के दिमाग में पूँजीवाद के प्रति अटूट श्रद्धा को कम कर समाजवाद एवं साम्यवाद की ओर आकर्षित किया। लोगों में भुखमरी, बेरोजगारी तथा निराशा ने अमेरिकी [illegible] को आने वाले वर्षों तक जकड़ कर रखा।

आर्थिक मन्दी के कारण (Causes of Depression 1930):- अनेक विचारकों में आर्थिक मन्दी के कारणों के विश्लेषण में मतभेद रहा है, यहाँ तक कि व्यापार चक्रों के बारे अनेक सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं। कुछ ने इसे मौद्रिक तथा मनोवैज्ञानिक बताया है तो कुछ ने उत्पादन आधिक्य तथा पूँजीवाद का प्रतिफल तथा सरकारी नियंत्रण का अभाव। चाहे कुछ भी हो 1930 के विश्वव्यापी आर्थिक मन्दी के अनेक कारणों का दुष्प्रभाव का परिणाम था। इसके कारणों को संक्षेप में निम्नलिखित हैं:-

1. सट्टा प्रवृत्ति:- प्रथम विश्वयुद्ध तथा युद्धोत्तरकाल में उद्योग में अत्यधिक लाभ की मात्रा ने सट्टा प्रवृत्तियों को बल दिया। जिसके लोग के विनियोग से प्रभावित हो अनेक विनियोग कर्ता शीघ्र धनवान बनने के आतुर थे इससे 1927 तक शेयरों तथा प्रतिभूतियों के मूल्य काफी ऊँचे थे पर 1929 में मूल्यों में एकदम कमी के साथ व्यवसाय चौपट हो गया तथा बैंकों को भी धक्का पहुँचा।

2. सुरक्षा की मिथ्या विचारधारा:- तीव्र विकास और सट्टा प्रवृत्तियों के आत्मविश्वास को अत्यधिक विश्वास और समृद्धि का [illegible] हो गया। वे जैन-केन प्रकारेण धन एकत्रित करने के मद में बेसुध हो गये और वास्तविकता को भूल बैठे।

Contd.

(iii) सरकारी नियंत्रण की [illegible]

(iv) [illegible] 1924 [illegible]

(v) [illegible]

(vi) [illegible] 1929 में [illegible]

(vii) [illegible]

(viii) उपभोक्ता [illegible]

Contd.

Dr. Kaushal Kumar
B.A. III
Eco - VI

जबकि लाभ का राज अधिक मांग थी था। बिना मांग के वस्तु का उत्पादन, आधिक्य की स्थिति थी, जाति को बढ़ाता है। परन्तु ऐसा सामान की मांग समाप्त हो गई। दूसरे अन्दरों राष्ट्रीय आय के उत्पादन की मांग कम कर दी इससे अधिक उत्पादन को बनाना मुश्किल हो गया और उत्पादन और उपभोग में भी असंतुलन व मूल्यों में गिरने की प्रवृत्ति को बढ़ाया। इसमें धन का असमान वितरण, मशीनीकरण, प्रतियोगिता पर निर्भरता तथा सरकारी नीति ने योगदान दिया।

(IX) कृषि आय में कमी :- उस समय तक अमेरिका में कृषि की प्रधानता थी और अधिकांश जन जीवन का आधार भी पर कृषकों की ऋणग्रस्तता, विक्रय-संगठनों का अभाव, विदेशों में निर्यात में कमी से अतिरिक्त उत्पादन का संचय उत्तरोत्तर बढ़ता गया और कृषि जन्य पदार्थों की कीमतों में 60% की भारी कमी से कृषकों की क्रय-शक्ति बहुत कम हो गई जिससे औद्योगिक माल की कीमतों में गिरावट आई।

(X) अव्यावहारिक बैंकिंग नीति :- बैंकों की उदार ऋण नीति से ऋणों में भारी वृद्धि हुई। सट्टे में धन की उधार की सीमा उच्च बढ़ गई थी ऊँची दरों पर विनियोग होने लगे और ऋणों की मात्रा बढ़ती गई पर ज्योंहि मंदी का आविर्भाव हुआ त्योंहि प्रतिभूतियों के मूल्य गिरने लगे। बैंकों के फेल होने का दौर चला और जनता में असंतोष हो बैंकों [illegible] औद्योगिक स्थिति को भी झकझोर दिया। इसको [illegible] का योग भी कम [illegible]

(XI) आर्थिक राष्ट्रवाद व विदेशी व्यापार में कमी :- प्रथम विश्वयुद्ध के बाद विश्व के सभी राष्ट्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के बजाय आर्थिक राष्ट्रवाद की प्रवृत्ति प्रबल हो रही थी। प्रतिबन्धात्मक संरक्षण की नीति से विदेशी व्यापार में कमी हुई तथा अति-उत्पादन की समस्या जटिल बनी।

महान आर्थिक मन्दी के निवारण के उपचार

(Measures To fight the great Depression):- आर्थिक मंदी के दुष्प्रभावों का विवेचन यह स्पष्ट करता है कि इस महान ऐतिहासिक मंदी ने अमेरिकी अर्थव्यवस्था के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया था। इन आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक दुष्प्रभावों के निवारण के लिए अनेक प्रकार के

Cont-

अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन उपचार बताये गये। आर्थिक मन्दी की शुरुआत 24 अक्टूबर 1929 को राष्ट्रपति हूवर (President Hoover) के समय में हुई थी। राष्ट्रपति हूवर रिपब्लिकन दल के प्रत्याशी होने से स्वतंत्र व्यापार और निर्बाध नीति के समर्थक और वे आर्थिक क्षेत्र में सरकार के कम से कम हस्तक्षेप के पक्षधर थे। उन्होंने आर्थिक मंदी को अल्पकालीन समझा तथा उनकी यह धारणा थी वह अपने आप हल हो जायेगी। यही कारण था कि प्रारम्भ में कोई प्रभावी कदम नहीं उठाये गये। पर स्थिति बिगड़ती गई और समस्या का उपचार अति आवश्यक हो गया तब हूवर ने कतिपय उपचारों की शुरुआत की।

(1) राष्ट्रपति हूवर (Hoover) के शासन काल में मंदी के उपचार :- जब 1929 में स्टॉक मार्केट संकट ने अपना [illegible] रूप धारण कर लिया तो राष्ट्रपति हूवर ने सामान्य व्यवसाय एवं मजदूरी की प्रचलित दरों में स्थायित्व रखने के लिए उद्योगपतियों से सहमति प्राप्त की। अर्थव्यवस्था में स्थायित्व बनाये रखने के प्रयत्न असफल सिद्ध हुए वस्तुओं के मूल्यों में तेजी से गिरावट तथा बेकारी का दबाव बढ़ता जा रहा था। ऐसी परिस्थिति में सार्वजनिक व्यय में वृद्धि कर क्रय शक्ति प्रदान करने तथा रोजगार उपलब्ध कराने के अलावा कोई विकल्प नहीं रहा। इस कारण काँग्रेस और सब सार्वजनिक कार्यों पर व्यय को बढ़ाने में अधिक उत्सुक थे और साथ ही साथ निजी व्यक्तियों, कम्पनियों तथा संस्थाओं का भी अधिक निर्माण कार्यों को प्रोत्साहित करने का उद्देश्य रखा गया।

1929 में कृषि विपणन अधिनियम (Agricultural Marketing act) के अंतर्गत स्थापित संघीय कृषि मण्डल (Fedral farm Board) ने अनाज और कपास की कीमतों को बढ़ाने के लिए अनाज एवं कपास स्थिरीकरण निगम (Grain and Cotton Stabilization Corporation) स्थापित किया गया और इस निगम ने अपने कार्य की पूर्ति के लिए लगभग 50 करोड़ डॉलर व्यय किया।

Cont.